



सत्रया नृत्य

//





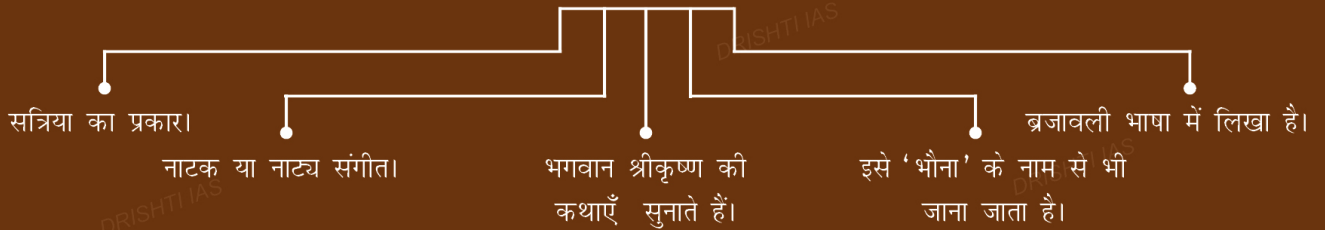
सत्रिया नृत्य (असम)



- ✦ प्रस्तुति: 15वीं शताब्दी में श्रीमंत शंकरदेव द्वारा।
- ✦ आधार: वैष्णव आस्था।
- ✦ स्रोत: 'सत्र' (वैष्णव मठ)।
- ✦ विष्णु की पौराणिक कथाओं का समावेश होता है।
- ✦ नाट्य शास्त्र (भरत मुनि) में वर्णित है।
- ✦ प्रेरणा: भक्ति आंदोलन।
- ✦ शास्त्रीय नृत्य के रूप में मान्यता: वर्ष 2000 में।
- ❖ पुरुष भिक्षुओं द्वारा समूह में किया जाता है जिसे 'भोकोट' के नाम से जाना जाता है
- ❖ **वाद्ययंत्र:**
 - ✦ ढोल
 - ✦ झाँझ (मंजीरा)
 - ✦ बाँसुरी



अंकिया नाट



❖ वेशभूषा:

- ✦ पुरुष नर्तक
 - ❖ धोती
 - ❖ पगड़ी
- ✦ महिला नर्तक:
 - ❖ पारंपरिक असमिया आभूषण
 - ❖ घुरी (Ghuri)
 - ❖ चादोर (बैंकवत)

❖ आधुनिक समय में सत्रिया की दो अलग-अलग धाराएँ:

- ✦ गायन बायनार नाच।
- ✦ खरमार ना